

ललाट चत्वर ज्वलद्धनन्जय स्फुलिंगभा
निपीत पंच सायकं नमन्नि लिंप नायकं ।
सुधा मयूज लोभया विराज मान शोभरं
महा कपालि संपदे शिरो जटाल मस्तु नः ॥ 6 ॥

कराल लाल पट्टिका धगद धगद धगद ज्वलद्धनन्जय
आहुती कृत प्रचंड पंच सायके ।
धरा धरेद्र नंदिनी कुयाग्र चित्र पत्रक
प्रकल्प नैक शिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥ 7 ॥

नवीन मेघ मंडली निरुद्ध दुर्धरस्फुर
त्कुहू निशीथिणीतमः प्रबंध बद्ध कंधरः ।
निलिंप निर्जरी धरस्तनोतु कृत्तिसिंधुरः
कलानिधान बंधुरः श्रियं जगद्धरंधरः ॥ 8 ॥

प्रकुल्ल नील पंकज प्रपंच कालिम प्रभा
वलंबि कंठ कंदली रुचि प्रबद्ध कंधरं ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मभच्छिदं
गजच्छिदांध कच्छिदं तमंत कच्छिदं लजे ॥ 9 ॥

अभर्व सर्व मंगला कला कंदल मंजरी
रस प्रवाह माधुरी विजृम्भणाम धुव्रतं ।
स्मरांतकं पुरांतकं भवांतकं मभांतकं
गजांत कांध कांतकं तमंत कांतकं लजे ॥ 10 ॥

जय त्वदभ्र विभ्रम भ्रमद्भुङ्गमश्चस
द्विनिर्गमत्कम स्फुरत्कराल लाल हव्यवाट ।
धिमि धिमि धिमि ध्वनभ्रमृदंग तुंग मंगल
ध्वनि कम प्रवर्तित प्रचंड तांडवः शिवः ॥ 11 ॥

दृषद्विचत्र तल्पयोर्भुङ्गं ग मौक्तिकस्रजोर्ग
र्षष्ठ रत्न लोष्ठयोः सुद्विपक्ष पक्षयोः ।
तृषारविंद चक्षुषोः प्रजमही महेद्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं लजाम्यहं ॥ 12 ॥

कदा नितिंप निर्जरी निङ्गुज डोटरे वसन
विमुक्त दुर्मतिः सदा शिरःस्थमंजलिं वहन ।
विलोल लोल लोचनो ललाम भाल लग्नकः
शिवेति मंत्र मुच्यरन कदा सुभी लवाम्यहं ॥ 13 ॥

र्षमं हि नित्य मेव मुक्त मुत्त मोत्तमं स्तवं
पठन स्मरन भ्रुवन्नरो विशुद्धि मेति संततं ।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां सुशन्दरस्य चिंतनम ॥ 14 ॥

पूजावसान समये दशवक्त्र गीतं
यः शंभु पूजनपरं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां रथ गर्जेद्र तुरंग युक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुभीं प्रददाति शम्भुः ॥ 15 ॥